खादी में रोज़गार के अवसर

2 अक्तूबर अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस

– प्रो. डॉ. योगेन्द्र यादव

आज कल चारों ओर व्याप्त बेरोज़गारी न केवल एक आर्थिक समस्या है, बल्कि एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में विकसित हो रही है. हमारे देश में स्कूल और कॉलेजों से उत्तीर्ण होकर निकलने वाले युवकों की बहुत बड़ी संख्या नौकरी के अवसरों की कमी के कारण हताश और निराश है. अपनी जीवन शक्ति और प्रतिभा को खो रही है. इसके पहले की बहुत देर हो जाए, सरकार, राजनैतिक दलों और गैर सरकारी संस्थाओं को एकजुट होकर युवा कर्म शक्ति के उपयोग के लिए नौकरियों का सृजन करना चाहिए. समाज के उन्नयन के लिए युवाओं की असीम ऊर्जा को रचनात्मक कार्यक्रमों में लगाने के लिए सभी प्रकार के प्रयत्न की आवश्यकता है. इस क्षेत्र में खादी और उससे जुड़े रोज़गार तथा धर्म के लोग साथ मिलकर उत्पादन प्रवृत्ति में जुटते हैं. इससे तनाव और वैमनस्य कम होता है और सुगठित समाज बनता है.

अपने एक लेख में स्वीकार करते हुए महात्मा गांधी कहते हैं कि मैं मानता हूं कि शोषित श्रम द्वारा तैयार की गई वस्तुओं को खरीदना और उनका इस्तेमाल करना पापयुक्त है. मेरे विचार में भारत और भारत ही क्यों सारी दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन-निर्वाह के लिए पर्याप्त काम उपलब्ध होना चाहिए. खादी और उससे जुड़े उत्पाद इसमें अहम भूमिका निभा सकते हैं. भारत की स्वतंत्रता में खादी का योगदान किसी से छिपा नहीं है. इसी खादी ने मैनचेस्टर के उद्योग-धंधों की रीढ़ तोड़ दी थी और गुलामी की अवस्था में हर हाथ को काम दिया था.

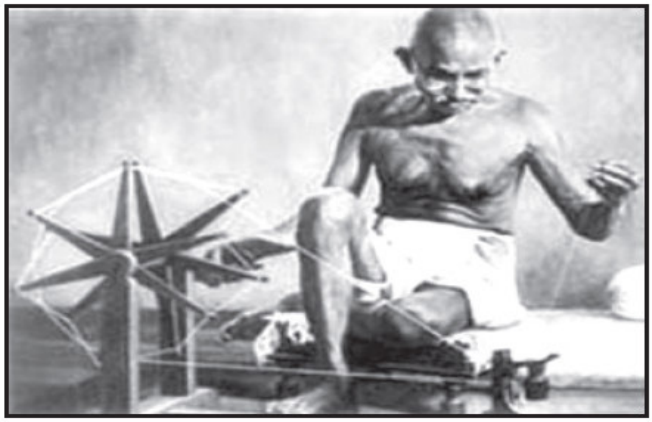

एक अहम भूमिका निभा सकते हैं. हम इक्कीसवीं सदी में हैं. जब सारी दुनिया एक विश्व ग्राम में सिमट गई है, तब हम उससे विच्छिन्न हो कर जी नहीं सकते.

बीसवीं सदी के आगमन तक भारत का शोषण हो चुका था. गांधी जी ने हिन्द स्वराज में केवल नैतिक और राजनैतिक समस्या का ही हल नहीं सोचा था, जनसंख्या आर्थिक प्रश्न का निराकरण भी किया था. सारे समाज की व्यवस्था आर्थिक बुनियाद पर निर्भर करती है. इसलिए उन्हें विश्वास हो गया था कि स्वराज प्राप्ति का माध्यम वस्त्र स्वावलंबन बनेगा. कपड़े के कल कारखानों के स्थान पर जब घर-घर में चरखा चलेगा, तब प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक स्वावलंबन के साथ अपनी गरिमा को भी प्राप्त कर पायेगा.

समाज की अत्यंत विकट समस्या गरीबी नहीं है, बेकारी है. बेकारी ही कष्टों और दंगों की जड़ होती है. अगर बेकारी टल जाए तो अपने आप गरीबी दूर हो जाएगी. खादी उस बेकारी को दूर करने का एक सर्वोत्तम उपाय है. इसका दूसरा फायदा यह है कि जहां खादी उत्पादन होता है, वहां अनायास समाज में व्यवस्थित सहयोग और संगठन बनते जाते हैं. विभिन्न जाति-पाति

इस बेकारी की भयावह स्थिति के कारण आज भारत के गांव के गांव खाली दिखाई पड़ रहे हैं. इन गांवों के पुरुष नगरों तथा महानगरों में जाकर मेहनत-मजदूरी कर रहे हैं और वहां एक निम्नतम कोटि का जीवन जी रहे हैं. यदि खेती से जुड़े खादी के व्यवसाय को पुनः सृजित किया जाए, तो उनको उनके घर में ही रोज़गार के साधन उपलब्ध हो जाएंगे और नगरों पर पड़ने वाला जनसंख्या का दबाव भी कम हो जाएगा. खादी वर्तमान समय में रोज़गार के एक प्रमुख साधन के रूप में विकसित हो रही है. इससे लगभग नौ लाख लोगों को रोज़गार प्राप्त हो रहा है. भारत सरकार अनेक नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से इस क्षेत्र को बढ़ावा देने का काम कर रही है, जिससे इस पेशे से जुड़े लोगों के जीवन स्तर को सुधारा जा सके. इसके अलावा इसमें काम करने के लिए उचित परिवेश और बेहतर वातावरण उत्पन्न किया जा सके. भारत सरकार द्वारा स्थापित खादी और ग्रामोद्योग आयोग कारीगरों की बेहतरी के लिए अनेक योजनायें क्रियान्वित कर रहा है.

खादी को स्वाधीनता का वस्त्र माना जाता है. सदियों से यह असंख्य कत्तिनों और कारीगरों की जीविका साधन रहा है. खादी की सबसे बड़ी विशेषता हाथ से बुना हुआ होना है. यदि इसमें उचित तकनीक तथा आधुनिक उपकरणों का उपयोग किया जाए, तो गुणवत्तायुक्त उत्पादन किया जा सकता है. इससे इसमें मानवीय श्रम भी कम लगेगा. इसके लिए भारत सरकार खादी को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाते हुए इसे बाजारोन्मुख, लाभदायक और सतत रोज़गार के रूप में परिवर्तित करने की दिशा में काम कर रही है. इसके उत्पादन, वितरण, संवर्धन और क्षमता निर्माण जैसी खादी गतिविधियों को सभी क्षेत्रों में समान रूप से विकसित करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है. बाजार के बदलते स्वरूप के अनुसार इसे प्रोत्साहित कर रही है.

खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने विगत कुछ वर्षों से इस क्षेत्र में बदलाव लाने और इसे जीवंत बनाने के लिए अनेक कदम उठाये हैं. संस्थाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करने से इस क्षेत्र में नई जान आ गई है. पंचवर्षीय योजनाओं में इनका अनुमोदन किया गया है. कच्चे माल, सूत, कपड़ा, उच्च संसाधन जैसे कि रंगाई, छपाई, सिलाई एवं उससे सम्बद्ध सभी कार्य जैसे पैकिंग, बिक्री भंडारों का आधुनिकीकरण, ले आऊट डिजाइन आदि में उन्नयन संबंधी काम किये जा रहे हैं. इन सभी क्षेत्रों में अपार रोज़गार की अपार सम्भावनाएं हैं.

भारत पारम्परिक उद्योगों के क्षेत्र में एक धनी देश है. यह पर्यावरण के अनुकूल होते हैं और इस कारण इस क्षेत्र में निर्यात की भी अपार सम्भावना होती है. इसमें देश के ग्रामीण हिस्सों में दूर-दूर तक रोज़गार के अवसर सृजित होते हैं. इसे उत्पादनकारी और प्रतिस्पर्धात्मक बनाने और उसके निरंतर विकास की सुविधा के लिए केन्द्र सरकार ने एक निधि की भी स्थापना की है. इस निधि का आवंटन राज्य सरकारों के माध्यम से संबंधित संगठनों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप आवंटित किया जाता है.

खादी और ग्रामोद्योग द्वारा अनुसंधान एवं विकास की गतिविधियां भी बहुत पहले से

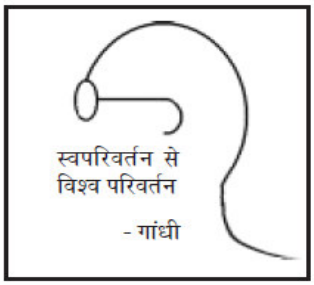

चलाई जा रही हैं. इससे तकनीक को बहुविध और नवीनतम बनाने का प्रयास किया जा रहा है. नया मॉडल चरखा, विकसित करघों और ई-चरखे का विकास और साथ ही खादी ग्रामोद्योगों के उत्पाद में प्रयुक्त की जाने वाली बहुत सी - अन्य तकनीक, अनुसंधान एवं विकास के प्रयासों के परिणाम हैं. उत्पादकों के मध्य गुणवत्ता जागरूकता विकसित करने के लिए घरेलू जांच प्रयोगशाला एवं आईएसओ 9001-2000 योजनाएं भी क्रियान्वित की गई हैं.

फैशन के इस युग में खादी एक महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकती है. जिस तरह से प्रतिवर्ष धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है, उसके हिसाब से खादी ही हमारी त्वचा के लिए सबसे उपयुक्त वस्त्र है. सिर्फ इसे आज के फैशन से जोड़ कर इसे लोगों के मनोकूल बनाने की जरूरत है. आज कल महानगरों में छात्र-छात्राएं खादी से बने फैशनेबल वस्त्र पहने देखे जा सकते हैं. फैशन कम्पनियां भी उनकी रुचियों को ध्यान में रख कर इस क्षेत्र में काम कर रही हैं. इस तरह से फैशन के क्षेत्र में खादी एक नया रोज़गार क्षेत्र सृजित कर रही है. इसके प्रचार-प्रसार के लिए देश विदेश में हर वर्ष अनेक प्रदर्शनियां भी लगाई जाती हैं.

इस तरह हम देखते हैं कि खादी एवं उससे जुड़े उद्योगों में रोज़गार की असीम सम्भावना है. उसके लिए केवल विशेष जन-जागरण की आवश्यकता है. उसके आधुनिकीकरण होने से उससे नियमित एवं पर्याप्त आय प्राप्त हो सकती है. अब तो बाजार में सोलर चरखे भी उपलब्ध हो गये हैं, जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त करके अच्छा उत्पादन किया जा सकता है. खादी की प्रासंगिकता दिनोंदिन विदेशों में बढ़ती जा रही है. फैशनयुक्त एवं युवाओं की मांग के अनुसार यदि वस्त्र उत्पादन किया जाए, तो बड़ी मात्रा में इससे वस्त्रों का निर्यात किया जा सकता है. खादी की बिक्री बढ़ाने के लिए हर वर्ष 2 अक्तूबर से 30 जनवरी तक विशेष छूट का भी प्रावधान है.

डॉ. भीमराव आम्बेडकर खादी एवं ग्रामीण उद्योग संस्थान, नाशिक, महाराष्ट्र; सी.बी. कोरा खादी एवं ग्रामीण उद्योग संस्थान, बोरीवली मुम्बई; बहुद्देश्यीय प्रशिक्षण संस्थान, दूरवानी नगर, बंगलौर; हल्द्वानी, नैनीताल, उद्योगपुरी, खंदागिरी भुवनेश्वर; राजघाट, नई दिल्ली; बिराती, कोलकाता; शेखपुरा पटना; कानवली देहरादून; दहानू, थाने, महाराष्ट्र; विशुनपुर, गुमला, झारखंड; विजय नगर, इंदौर, म.प्र.; जयप्रकाश नगर, बलिया; सेवापुरी, वाराणसी; शिवदासपुरा, जयपुर; कुमारी कट्टा, नालबारी, असम; जेम्ववक, आइजोल, मणिपुर; नगमा, दिमापुर, नगालैंड; एर्नाकुलम, केरल; राजेन्द्र नगर, हैदराबाद; टी. कालूपट्टी, मदुरै; वीरापंडी, तिरुपुर, तमिलनाडु; आगाखां पैलेस, पुणे सहित अनेक संस्थान सफलतापूर्वक तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं, जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त करके इस क्षेत्र को भी युवा अपने रोज़गार का साधन बना सकते हैं.

(लेखक गांधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव, महाराष्ट्र में गांधीयन स्कॉलर हैं. ई-मेल : dr.yadav. yogendra@gandhi foundation. net)